सन्धि

Name:- Sani kumari
class:- B.A II year
Deptt:- Sanskrit

= दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं। वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः अर्थात वर्णों का परस्पर विकारयुक्त होकर मिलना ही सन्धि है। विकार से तात्पर्य है - वर्ण परिवर्तन। सन्धि के लिए संहिता का होना आवश्यक है। परः सन्निकर्षः संहिता अर्थात वर्णों के अतिशय निकटता की संहिता संज्ञा होती है।

उदा० - मधु + अरिः = मध्वरिः
रमा + ईशः = रमेशः

संस्कृत में तीन प्रकार की सन्धि होती है-
(1) स्वर सन्धि (2) व्यञ्जन सन्धि (3) विसर्ग संधि

स्वर सन्धि

= स्वर या स्वर के बाद दूसरा स्वर रहने पर दोनों में मेल होने को स्वर सन्धि कहते हैं अर्थात दो स्वरों के मेल को स्वर सन्धि कहा जाता है। इसके मुख्य 5 भेद है-

(1) दीर्घ सन्धि:- ~~दीर्घ सन्धि~~

= अकः सवर्णे दीर्घः — अक् (अ, इ, उ तथा ऋ) के बाद समान स्वर (अ, इ, उ तथा ऋ) रहने पर दोनों मिलकर दीर्घ हो जाता है।

उदा० - मनीशः = मुनि + ईशः। भानु + उदय = भानूदय

(२)

वृद्धि सन्धि

ऐत् (ऐ औ) तथा एङ् (ए, ओ) को गुण कहते हैं।
यदि अ वर्ण (अ या आ) के बाद ए या ऐ हो
तो दोनों को मिलाकर ऐ हो जाता है। यदि अ
वर्ण के बाद ओ या औ रहे तो दोनों को मिलाकर
औ हो जाता है और यदि अ वर्ण के बाद ऋ हो
तो दोनों मिलाकर आर् हो जाता है।

उदा० — परमेश्वर = परम + ईश्वरः

परमोदारः = परम + उदारः

सप्तर्षिः = सप्त + ऋषि

③ यण सन्धि

(इको यणचि)

यदि इ, उ, ऋ, और लृ के बाद अपने से भिन्न
कोई स्वर हो तो इ का य्, उ का व्, ऋ का र्,
लृ का ल् होता है।

उदा० — इत्याकर्ष = इति + आकर्ष

अत्युक्ति = अति + उक्ति

अन्वय = अनु + अय

Name - [illegible]
Class - B.A. I year
Sub - Sanskrit

वृद्धि सन्धि

वृद्धिरेचि

यदि अ वर्ण (अ या आ) के बाद ए या ऐ रहे तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है, यदि अ वर्ण के बाद ओ या औ रहे तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है।

उदा० — सदा + एव = सदैव
जल + ओघः = जलौघः
सुख + प्रश्नः = सुखार्तः

⑤

अयादि सन्धि

एचोऽयवायावः

अच् अर्थात स्वर वर्ण परे रहने पर एच् (ए, ओ, ऐ, औ) के स्थान में क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होता है। इसमें ए = अय्, ओ = अव्, ऐ = आय तथा औ = आव होते हैं।

उदा० — हरे + ए = हरये
ने + अनम् = नयनम्
शे + अनम् = शयनम
नै + अकः = नायक
पौ + अकः = पावकः
भो + अनम् = भवनम

समास
रूप सिद्धि

Name:- Sovi kumari
class:- B.A III year
Deptt:- Samskrit

अधिहरि

लौकिक विग्रह = हरौ। अलौकिक विग्रह- हरि ङि अधि
इस स्थिति में विभक्ति अर्थ में 'अव्ययं विभक्ति०' से विद्यमान अधि अव्यय का 'अव्ययं विभक्ति-0' सूत्र से समास होता है। पुनः कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् 'ङि' का लोप होने पर रूप बनता है —

हरि अधि

इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' ने 'अधि' की उपसर्जन संज्ञा होने के फलस्वरूप 'उपसर्जनं पूर्वम्' से 'अधि का पूर्व प्रयोग। होने के बाद रूप बनता है —

'अधि हरि'

इस स्थिति में 'एकदेश विकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर स्वौजसमौट्० से 'सु' के आगमन होने के पश्चात रूप बना है —

'अधि हरि सु'

इस स्थिति में 'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा होने पर अव्ययादाप्सुपः से 'सु' का लोप होने पर —

अधिहरि रूप सिद्ध होता है।